भारतीय प्रबंध संस्थान रायपुर
Indian Institute of Management Raipur

IIM Raipur Celebrates 72nd Republic Day

IIM Raipur celebrated India's 72nd Republic day at its campus with great fervour and zeal. The day's proceedings commenced ceremoniously with the inspection of the guard of honour by Prof. Bharat Bhasker, Director IIM Raipur. This was followed by the flag hoisting ceremony. The National Flag swayed in all its splendour and glory as the IIM Raipur fraternity sang the National Anthem in chorus with an infused sense of patriotism.

Prof. Bharat Bhasker addressed the faculty, staff and students. He took pride in being an Indian and said that this day is to remind us that as a 'Gantantra', we have decided to rule ourselves with a set of Dharma. Our constitution is prepared by studying the best of the democrat countries of the world and adopted the best of the practices. In order to bind up together in a vide, vivid and diverse country as ours, where there are many traditions, we required a certain document in written form. The written document which is worshipped as the foundation of this country is the 'Constitution of India'.

Prof. Bhasker further inspired everyone present there to follow the path of self-dependence or 'Atma Nirbharta' in order to become a thriving flourishing nation. Atma Nirbharta is not designed set of principles or goals, it is something to be

imbibed in each one of us that as a human being how I can contribute something to the nation and create opportunities for others rather than being dependent on somebody. He emphasised that certain distinguish personal goal in life should be there and it should be in alignment to the national goal or for the development of our country to make India as world's top-ranking democracy. He further stated that personal goal should also be in alignment to the social goal i.e. towards the wellness of society. As we survive as an entity in a part of society as a part of nation, together we need to establish a goal which will groom personal capabilities but will also contribute to the society, and automatically to the nation.

Prof. Bhasker also talked about the qualities which are required to accomplish those goals. While being in a campus, he encouraged to develop those qualities and focussed on analysing the resources which we have in terms of knowledge, skills, finances and generating those finances. He also focussed on find out the lacunas and work on how to reach that level of achievement. He also focussed on the ability to communicate and carry on with people is important so that personal ideas or goals must be translated and understood by others. He further spoke on the importance of leadership skills and ability to work in a team spirit to accomplish majority of tasks.

Concluding his speech, Prof. Bhasker spoke extensively about the importance of ethics. He emphasised that have success in life where you can pride yourself that you have done the right things. In an international and globalized economy, where there may be ethical dilemmas, he encouraged to follow the ethics as core principles.

In the end, the children of faculty and staff members showcased their talent by presenting demo of 'Taekwondo Style' which they learnt in the campus. The prizes were distributed to them by our Honourable Director. The beautiful morning came to a close in a traditional manner with sweets and refreshments.

IIM रायपुर ने 72 वां गणतंत्र दिवस मनाया

IIM रायपुर ने भारत के 72 वें गणतंत्र दिवस को अपने परिसर में बड़े उत्साह और उत्साह के साथ मनाया। प्रो. भारत भास्कर, निदेशक IIM रायपुर द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर के निरीक्षण के साथ दिन की कार्यवाही औपचारिक रूप से शुरू हुई। इसके बाद ध्वजारोहण समारोह हुआ। आईआईएम रायपुर बिरादरी ने मिलकर एकसाथ देशभक्ति की भावना के साथ राष्ट्रगान गाया था।

प्रो. भारत भास्कर ने संकाय, कर्मचारियों और छात्रों को संबोधित किया। उन्होंने एक भारतीय होने पर गर्व किया और कहा कि यह दिन हमें याद दिलाने के लिए है कि 'गणतंत्र' के रूप में, हमने खुद को अपने धर्म के साथ शासित करने का फैसला किया है। हमारा संविधान दुनिया के सबसे अच्छे लोकतांत्रिक देशों का अध्ययन करके तैयार किया गया है और सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाया गया है। एक ज्वलंत और विविध देश को एक साथ बांधने के लिए, जहां कई परंपराएं हैं, हमें लिखित रूप में एक निश्चित दस्तावेज की आवश्यकता है। यह लिखित दस्तावेज जिसे इस देश की नींव के रूप में पूजा जाता है, वह है 'भारत का संविधान'।

प्रो. भास्कर ने वहाँ उपस्थित सभी को आत्म निर्भरता के मार्ग पर चलने या ‘आत्म निर्भार’ के रूप में एक समृद्ध उत्कर्ष राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित

किया। आत्म निर्भरता कोई तैयार सिद्धांत या लक्ष्य नहीं है, यह हम में से हर एक का यह जानना है कि एक इंसान के रूप में मैं कैसे राष्ट्र के लिए कुछ योगदान कर सकता हूं और किसी पर निर्भर होने के बजाय दूसरों के लिए अवसर पैदा कर सकता हूं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जीवन में कुछ विशिष्ट व्यक्तिगत लक्ष्य होना चाहिए और यह भारत को विश्व का शीर्ष लोकतंत्र बनाने के लिए राष्ट्रीय लक्ष्य के या हमारे देश के विकास के संरेखण में होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि व्यक्तिगत लक्ष्य भी सामाजिक लक्ष्य के अनुरूप होना चाहिए यानी समाज की भलाई के लिए। जब हम समाज के एक हिस्से में राष्ट्र के एक हिस्से के रूप में जीवित रहते हैं, मिलकर हमें एक ऐसा लक्ष्य स्थापित करना चाहिए जो व्यक्तिगत क्षमताओं को तैयार करेगा और साथ ही समाज और राष्ट्र के लिए स्वचालित रूप से योगदान भी देगा।

प्रो. भास्कर ने उन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक गुणों के बारे में बात। एक परिसर में रहते हुए, उन्होंने उन गुणों को विकसित करने और उन संसाधनों का विश्लेषण करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जो हमारे पास ज्ञान, कौशल, वित्त के रूप में हैं। उन्होंने कमियों को जानने और उन्हें दूर करने के प्रयासों की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने लोगों के साथ संवाद करने और काम करने की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करने का महत्व बताया, ताकि व्यक्तिगत विचारों या लक्ष्यों को दूसरों द्वारा समझा और अपनाया जा सके। आगे उन्होंने अधिकांश कार्यों को पूरा करने के लिए नेतृत्व कौशल और एक टीम भावना में काम करने की क्षमता के महत्व पर बात की।

उनके भाषण का समापन, प्रो. भास्कर ने नैतिकता के महत्व के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने जोर देकर कहा कि जीवन में सफलता वहाँ प्राप्त करें जहां आप खुद पर गर्व कर सकते हैं कि आपने सही काम किया है। एक अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था में, जहां नैतिक दुविधाएं हो सकती हैं, उन्होंने नैतिक

सिद्धांतों को जीवन के मूल सिद्धांतों के रूप में पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अंततः, फैकल्टी और स्टाफ सदस्यों के बच्चों ने ताइक्वांडो स्टाइल का डेमो प्रस्तुत करके अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जो उन्होंने परिसर में सीखा था। हमारे माननीय निदेशक द्वारा उन्हें पुरस्कार वितरित किए गए। इस सुंदर सुबह का समापन मिठाई वितरण और जलपान के साथ पारंपरिक तरीके से किया गया।